संपादक के नोट

प्रभु की स्तुति हो।मैं आप सभी को एक खुश और समृद्ध नए साल की शुभ का मना देती हूँ।आओ हम इस नए साल में प्रभु यीशु का हाथ पकड़ कर कदम रखें क्योंकि यीशु हमारा हाथ कभी नहीं छोड़ेगा और वह हमेशा हमारे साथ होगा।ये हमारे लिए उन का वादा हैं।मत्ती 28 : 20 ''और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञादी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।''वह प्रभु है जो तुम से पहले जाएगा।वह तुम्हारे साथ होगा, वह तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा और न ही तुम्हें त्यागेगा, डरो मत और न हीनिराश हो। प्रेरित पौलुस इब्रियों के लिए लिखतेहै, इब्रानियों 13 : 5–6 ''तुम्हारा स्वभावलोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर संतोष किया करो;क्योंकि उस ने आपही कहा है, कि मैं तुझे कभी न छोडूंगा; और न कभी तुझे त्यागूंगा। 6 इसलिए हम बेधड़ कहो कर कहते हैं, कि प्रभु, मेरा सहायक है, मैं न डरूंगा, मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।''प्रभु यूसुफ के साथ था और वह एक सफल मनुष्य था। उनके स्वामी ने देखा किप्रभु उसके साथ था और प्रभु ने वह सब उस केहा थ में सफल करने के लिए किया था।उत्पत्ति 39 : 2–3 ''2 और यूसुफ अपने मिस्री स्वामी के घर में रहता था, और यहोवा उसके संग था, सो वह भाग्यवान पुरूष होगया। 3 और यूसुफ के स्वामी ने देखा, कि यहोवा उसके संग रहता है, और जो काम वह करता हैउसको यहोवा उसके हाथ से सफल कर देता है।''यहां तक कि जेल में भी प्रभु यूसुफ के साथ था।उत्पत्ति 39 : 21 ''पर

यहोवा यूसुफ के संग संग रहा, और उस पर करूणा की, और बन्दीगृह के दरोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस परहुई।''अपने हर्षित समय में और दु:ख के समय के दौरान भी, अपनी आँखें हमेशा हमारे प्रभु के ओर राखों, जो सभी परिस्थिति योंमें आप के साथ है।अपने सभी क्लेश ओर संकट के समय में, वह आप के साथ खड़ा रहेगा।बाइबिल कहता है यशायाह 63 : 9 ''उनके सारे संकट में उसने भी कष्ट उठाया, और उस केसम्मुख रहने वाले दूतने उनका उद्धार किया, प्रेम और को मलता से उसने आपही उन को छुड़ाया, उसने उन्हें उठाया और प्राचीन काल से सदा उन्हें लिए फिरा।''

वह प्रभुजो यूसुफ के साथ था ओर यहोशा पात के साथभी था जिस के कारण वह अपने राज्य को मजबूत बना सका 2 इतिहास 17 : 3–5 ''3 और यहोवा यहोशा पात के संग रहा, क्योंकि वह अपने मूल पुरुष दाऊद की प्राचीन चालसी चाल चला और बाल देवताओं की खोजमें न लगा। 4 वरन वह अपने पिता के परमेश्वर की खोज मेंलगा रहता था और उसी की आज्ञा ओंपर चलता था, और इस्राएल के से काम नहीं करता था। 5 इस कारण यहो वाने राज्य को उस के हाथ में दृढ़ किया, और सारे यहू दी उसके पास भेंट लाया करतेथे, और उसके पास बहुत धन और उसका वैभव बढ़ गया।''

उसी तरह, अगर प्रभु तुम्हारे साथ है, सफलता तुम्हे खोज कर धन, गौरव और सम्मान के साथ आएगी।

अगर प्रभु इस वर्ष में आप के साथ होना है, तो आपको क्या करना चाहिए? 2 इतिहास 15 :2 ''और वह आसासे भेंट करने निकला, और उस सेकहा, हे आसा, और हेसारे यहूदा और बिन्या मीन मेरी सुनो, जबत कतुम यहोवा के संग रहोगेत बतक वह तुम्हारे संग रहेगा,,और यदि तुम उसकी खोज मेंलगे रहो, तब तो वह तुम से मिला करेगा, परन्तु यदि तुम उसको त्याग दोगे तो वह भी तुम को त्याग देगा।''

सिर्फ इस साल नहीं, लेकिन उम्र के अंततक वह तुम्हारे साथ होगा, तुम भी हमारे प्रभु की कृपा के अंतर्गत होना चाहिए।यशायाह 54 : 10 ''चाहे पहाड़ हटजाएं और पहाडियां टल जाएं, तौ भी मेरी करूणा तुझ पर से कभी न हटेगी, और मेरी शान्ति दाय कवाचा न टलेगी, यहोवा, जो तुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है।''

प्रभु इस वर्ष तुम सबको आशीर्वाद दे।संभ वहो की प्यार, खुशी और शांति आप के साथ रहे और आपके परिवार के साथ रहे।

प्रभु में.

पास्टर सरोज म.

प्रभु की ताड़ना को सच्चाई से लेलो !

प्रेरितों के काम 9 : 5 ''उस ने पूछा, हे प्रभु, तू कौन है? उस ने कहा, मैं यीशु हूं, जिसे तू सताता है।''शाऊल के गहरे हृदय के भीतर से एक सवाल आया, उसने प्रभु से पूछा, ''तुम कौन हो, प्रभु?''। इस सवाल ने शाऊल का जीवन बदल दिया और उसे प्रेरित पौलुस में बदल दिया। इसके अतिरिक्त, पौलुस के जीवन में अपार आशीर्वाद ले आया। वह प्रभु का एक महान सेवक बन गया।यहां तक कि हमें भी प्रभु से यह सवाल पूछने के लिए इच्छा होनी चाहिए और यह पता लगाने के लिए की यह शक्तिशाली प्रभु कौन है ? हमें भी इस पराक्रमी प्रभु की शक्ति और सामर्थ्य का पता करने के लिए प्रयास करना चाहिए? इस दिन तक, शाऊल प्रभु की शक्ति और सामर्थ्य को नहीं जानता था।

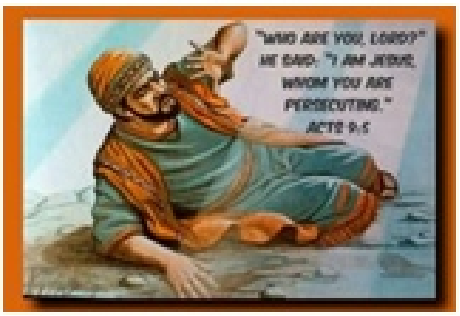

उसने सोचा कि जो कुछ भी वह कर रहा था कानून के अनुसार ही कर रहा था, और हर तरह से सही था।लेकिन प्रभु की दृष्टि में उसकी हरकत बहुत उदास करनेवाली थी। हम यह भी देखते हैं कि प्रभु ने उस से आमने सामने इस जगह में बात की थी। इस प्रकार जब वह प्रभु से सवाल किया ''तुम कौन हो, प्रभु?'' प्रभु का जबाब तुरंत उसे प्रेरित पौलुस के लिए परिवर्तित किया और इस प्रकार पूरी तरह से उसकी जिंदगी बदल दी।इस दुनिया में भी, बहुत कुछ सीखे हुए और विद्वान् लोग विश्वास नहीं करते है की 'ईश्वर' है, उन्हें लगता है कि कोई शक्ति जैसे प्रभु की शक्ति के रूप में इस तरह से है ही नहीं। लेकिन बाइबिल में कहते हैं भजन संहिता 53 : 1 ''मूढ़ ने अपने मन में कहा है, कि कोई परमेश्वर है ही नहीं। वे बिगड़ गए, उन्होंने कुटिलता के घिनौने काम किए हैं, कोई सुकर्मी नहीं।''ऐसे लोग मूर्ख हैं और वे हमें हमारे जीवन में कुछ भी नहीं दे सकते हैं। वे कभी अच्छा नहीं सोच सकते है और न ही अच्छा करते हैं और न ही हमारे जीवन में कुछ भी योगदान कर सकते हैं। वे मूर्ख है जो विश्वास करते है की प्रभु की कोई शक्ति नहीं है, तो कैसे वे इस दुनिया के लोगों के जीवन में कुछ भी योगदान दे सकते हैं। याद है जब शाऊल ने परमेश्वर से पूछा था ''तुम कौन हो, प्रभु?'' प्रभु अलग ढंग से जवाब दे सकता था कि ''मैं इस स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माता हूँ'', ''मैं ही हूँ, जिसने सितारेबनाए, चंद्रमा और आकाश बनाया'', मैं ही हूँ जिसने नदियां बनाई और इस दुनिया में समुद्र बनाया'', ''मैं ही हूँ जिसने तुझे तेरी मां के गर्भ में बनाया''।प्रभु उस से कह सकता था की इस दुनिया में अपनी शक्तियों के कई अद्भुत काम

और पराक्रम शक्ति के बारे में बता सकता था। लेकिन नहीं, प्रभु ने बस शाऊल से कहा '' तू मुझे क्यों सताता है?''। हमारे जीवन में भी, हमें सब गलत आदतों और काम जो प्रभु को अप्रसन्न करता है त्यागना चाहिए। हमें हमारे प्रभु को कभी कुछ भी अप्रिय बात नहीं करनी चाहिए। यह हमारे प्रभु को दुख लाता है। बल्कि, हम हमेशा प्रभु की दृष्टि में सब कुछ मनभावन करने के लिए प्रयास करना चाहिए जो कि हमारे प्रभु के लिए केवल खुशी लाएगा। याद रखें, हम अपने प्रभु को चोट तब पहुचाते है जब हम उसकी इच्छा के विरुद्ध काम करते हैं।

षाऊल ने हमेशा बड़ी उत्साह के साथ अपना काम किया है। प्रेरितों के काम 9 : 1–2 ''1 और शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और घात करने की धुन में था, महायाजक के पास गया। 2 और उस से दमिश्क की अराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियां मांगी, कि क्या पुरूष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बान्ध कर यरूशलेम में ले आए।''शाऊल ने क्या किया? शाऊल उच्च महायाजक के पास गया ताकि वह प्रभु के चेलों को सताने के लिए अनुमति प्राप्त कर सकें, जो भी उनके साथ प्रभु की प्रशंसा और स्तुति दमिश्क के मंदिरों में कर रहे थे। वह उन्हें पकड़ने गया और उन्हें यरूशलेम में ही लाना चाहते थे। यह काम है जो कि शाऊल ने महान क्रोध और गर्व के साथ किया।केवल यही नहीं, जब स्तिफनुस को लोगों ने पत्थरों से मार डाला था, उस समय उसके कपड़े को यह ही व्यक्ति शाऊल द्वारा संरक्षित किया गया। पूर्व चर्चों जब काम बढ़ने के समय के दौरान, प्रभु ने उनके कार्य करने के लिए कई लोगों को चुना। स्तिफनुस उनमें से एक था। वह प्रभु का काम करने के लिए अभिषेक किया गया था। उस समय, कैसे शाऊल प्रभु के बच्चों को सताया करता था उसी तरह, स्तिफनुस पर भी लोगों ने विद्रोह कर दिया और पत्थरवाह करके मार दिया था, उस समय उसके कपड़े उसके शरीर से फट गए जो की यह व्यक्ति शाऊल द्वारा संरक्षित किया गया।प्रेरितों के काम 7 : 58 ''वे उसे खदेड़कर नगर से बाहर ले गए और उसका पथराव करने लगे। गवाहों ने अपने चोगे उतारकर शाऊल नामक एक नवयुवक के पास रख दिए।''हम देखते हैं कि जब प्रभु के बच्चों के खिलाफ यह सभी बातें हो रही थी, शाऊल ने कभी नहीं सोचा था कि यह हमारे प्रभु परमेश्वर को दुःख पहुचेगा। इसी तरह, जब इस दुनिया के लोग प्रभु के पराक्रम सेवकों के खिलाफ बोलते हैं और बिना कोई अनुप्रास या कारण प्रभु के बच्चों को सताते है, यह कभी उनके मन में महसूसनहीं होता है कि वे खुद प्रभु के खिलाफ गलत कर रहे हैं।वे भूल जाते हैं कि प्रभु की आँखें इस दुनिया में है जो सब गलत हो रहा है उसेदेख रही हैं और उसके कान सब जो गलत हो रहा है उनके खिलाफ कहा जा रहा है हमेशा प्रवृत्त है। इसी तरह, शाऊल ने नहीं सोचा था कि प्रभु के बच्चों को सताना मतलब खुद प्रभु को सताना है। प्रभु के लोग, उनकी आंख का तारा हैं जैसे की कहा है जकर्याह 2 : 8 ''क्योंकि सेनाओं का यहोवा यों कहता है, उस तेज के प्रकट होने के बाद उसने मुझे उन जातियों के पास भेजा है जो तुम्हें लूटती थीं, क्योंकि जो तुम को छूता है, वह मेरी आंख की पुतली ही को छूता है।''शाऊल ने इस दुनिया में केवल कानून के अनुसार काम किया है, लेकिन एक बार भी रुक कर नहीं सोचा कि वह क्या कर रहा था गलत था।प्रेरितों के काम 9 : 3–4 ''3 परन्तु चलते चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी। 4 और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, कि हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?'' सड़क पर दमिश्क को, प्रभु ने शाऊल से बात की। प्रभु शाऊल को सही या दंडित करने के लिए नहीं आया था, बल्कि वह उससे बात किया और उसेअनन्त जीवन देने के लिए आया था। इसी तरह, प्रभु इस दुनिया में केवल उसके राज्य में प्रवेश करने के लिए एक रास्ता बनाने के लिए नहीं आया, लेकिन हमें

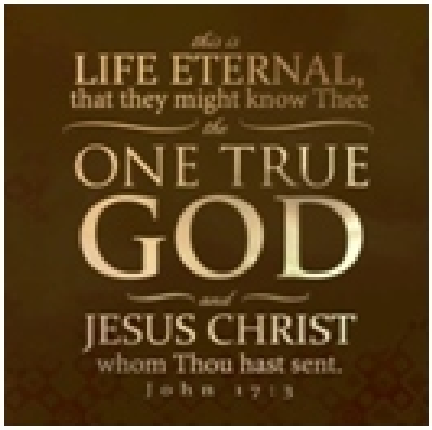

अनन्त जीवन देने के लिए आया था। इस प्रकार, प्रभु केवल शाऊल को प्रेरित पौलुस में परिवर्तित करने के लिए नहीं आया था और उसे आशीर्वाद देकर इस दुनिया में प्रभु का काम करने के लिए और इस प्रकार उसे अनुग्रह करने के साथ अनन्त जीवन देने के लिए आया था।

यूहन्ना 17 : 3 ''और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझे अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।''आज तक, शाऊल ने परमेश्वर को नहीं जाना, लेकिन आज जब प्रभु दमिश्क के सड़क पर उनसे मुलाकात की, प्रभु ने अनन्त जीवन के साथ उसकी शोभा बढ़ाई।

शाऊल बिन्यामीन के वंश से था, वह इस देश के सभी कानूनों को जानता था, वह एक बहुत ही सीखा हुआ और एक बुद्धिमान व्यक्ति था। लेकिन उसने प्रभु के कई बच्चों को सताया था। हमारे परमेश्वर ने वह सब देखा जो शाऊल ने परमेश्वर के लोगों के खिलाफ किया था, लेकिन एक दिन प्रभु ने उसे अनन्त जीवित के साथ उसे आशीर्वाद दिया। हम यही ही बात आज इस दुनिया में देखते हैं। प्रभु हम सभी से अलग ढंग से बातें करता हैं, हम सब उसे स्वीकार करना चाहिए और हमारे जीवन को सही करना चाहिए।प्रभु उनके वचन के माध्यम से हमारे साथ बात करता है, हमें उनके वचन को स्वीकार करना चाहिए और उसी के अनुसार हमारे जीवन को सही करना चाहिए। हम बाइबल में लूका में पढ़ा है की यीशु ने पतरस को चेतावनी देकर कहा ''शत्रु ने मेरी अनुमति ले ली है की वह तुम्हे अच्छी तरह से झारना के लिए ले''। यह सुनने के बाद, पतरस को कितना अधिक सावधान होना चाहिए था? लेकिन पतरस ने इस चेतावनी को बहुत हल्के ढंग से ले लिया।जब यीशु को कब्जा कर लिया था और दूर ले जाया जा रहा था, पतरस ने यीशु से दूर होना शुरू कर दिया और वह उनके पास से दूर रहा। यही कारण है कि पतरस ने यीशु को तीन बार इनकार किया था। हमें भी बहुत सावधान रहना है जब हम अपने जीवन में आगाह किएजाते है, इस समय हमें प्रभु के नजदीक जाने की जरूरत है। लेकिन यीशु से दूर जाने पर, हम

भी प्रभु को इनकार कर देंगे जैसे पतरस ने किया था।हाँ, जब पतरस भी पकड़ा गया था, और यीशु के भविष्यवाणी के अनुसार पतरस मुर्गे के तीन बार बांग देने से पहले उन्हें इनकार करेगा, ऐसा ही हुआ और उनके वचन पुरे हुए। याद रखे, हमें हमेशा परमेश्वर की ओर से चेतावनी मिलती हैं, बहुत ही पहले की घटना घटित हो, इस तरह हम इस प्रकार बुद्धिमान और चौकस रहना चाहिए, हमारे हर कार्य के लिए सावधान रहना चाहिए। क्या हुआ जब शाऊल ने स्वर्गीय प्रकाश को देखने पर जमीन पर गिर गया? हम पढ़ते है प्रेरितों के काम 9 : 3 ''परन्तु चलते चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुंचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी।''यह एक साधारण प्रकाश नहीं था, जब शाऊल एक बार फिर से उठा वह अंधा हो गया था। यह वह समय है की प्रभु ने पूछा ''तू मुझे क्यों सताता है?''। ऐसा भी इस दुनिया में, जब हम प्रभु और प्रभु के लोगों के सेवकों के खिलाफ बोलते हैं, तो हम किसे परेशान कर रहे हैं? हम खुद प्रभु को परेशान कर रहे है और उन्हें दुखित करते है। इस प्रकार, हमें ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए जिसे प्रभु को चोट पहुचे, बल्कि हम उसे खुश करने के लिए सब कुछ करना चाहिए।जब प्रभु चाहता है की हम कुछ भूल जाये, कुछ लोग, हमें उसका तुरंत पालन करना चाहिए। हमें उन लोगों के साथ कोई लेना देना नहीं होना चाहिए। याद रखें, प्रभु की आँखों अच्छे लोग और बुरे पर भी हैं।हम पवित्र ग्रंथ में देखते हैं, कि जो कोई भी प्रभु के दर्शन की इच्छा रखते है, प्रभु ने उन सभी से मुलाकात की। जक्कई, यरीहो के देश में एक चुंगी लेनेवाला था। वह यीशु को देखने की इच्छा तब से रखा था जब से वह प्रभु के सभी अद्भुत कार्यों के बारे में लोगों के बीच किए गए ऐसा सुना था। समयऔर हिम्मत नहीं थी की वह यीशु के सामने आ सके, वह उस से डरता था। इस प्रकार, छोटे कद की वजह से, वह गूलर के पेड़ पर चढ़ गया और उस पर बैठ गया, यीशु का इंतजार करने लगा की कब वह यहाँ से गुजरे।यीशु जक्कई की इस इच्छा को जानता था, इस प्रकार जब वह वहां से गुजरा उसने जोर

से बुलाया ''जक्कई नीचे आ, मैं आज तुम्हारे घर आ रहा हूँ''। जक्कई तुरंत नीचे आया और यीशु के पास अपने पापों को कबूल कर लिया और वह उसे अपने घर ले जाने पर बहुत खुश था। उस दिन जक्कईऔर उसके परिवार को 'उद्धार' प्राप्त हुआ। लूका 19 : 9 ''तब यीशु ने उस से कहा; आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिएकि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है।''हमें भी ऐसी इच्छा हमारे भीतर होनाचाहिए, हम भी प्रभु को लगन से तलाश करना चाहिए। हमें आँख मूंदकर प्रभु की तलाश करना चाहिए, हमें निश्चित रूप से प्रभु जरूर मिल जाएगा, अगर हम वह करे जो प्रभु की दृष्टि में भाता है। हम पढ़ते है लूका 19 : 1–9 ''1 वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था। 2 और देखो, जक्कई नाम एक मनुष्य था जो चुंगी लेने वालों का सरदार और धनी था। 3 वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन है परन्तु भीड़ के कारण देख न सकता था। क्योंकि वह नाटा था। 4 तब उस को देखने के लिए वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया, क्योंकि वह उसी मार्ग से जाने वाला था। 5 जब यीशु उस जगह पहुंचा, तो ऊपर दृष्टि करके उस से कहा; हे जक्कई झट उतर आ; क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है। 6 वह तुरन्त उतर कर आनन्द से उसे अपने घर को ले गया। 7 यह देख कर सब लोग कुड़कुड़ा कर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा उतरा है। 8 जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा; हे प्रभु, देख मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं। 9 तब यीशु ने उस से कहा; आज इस घर में उद्धार आया है, इसलिए कि यह भी इब्राहीम का एक पुत्र है।''याद रखें, हमारे प्रभु को हमारा अतीत, वर्तमान और भविष्य पता है। कोई भी उनकी बुद्धि की सीमित नहीं जानता और उसके पास से कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। प्रेरित पौलुस कहते हैं रोमियो 11 : 33 ''आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!''प्रभु का ज्ञान अपरिमित और परिसीमाहित है। हमें कभी नहीं सोचना चाहिए कि वह सुनता नहीं है जो भी हम क्या बोलते हैं या वह नहीं जानते कि हम क्या सोचते हैं। उन दिनों में, फरीसियों और सदूकियों कभी एक चुंगी लेनेवाले को अपने तरफ रहने की अनुमति नहीं देते थे। आज भी, यहूदा और मुसलमानों के लोग अपने पैसे ब्याज हासिल करने के लिए कभी नहीं देते है। यह उनकी दृष्टि में एक महान बुराई है। इस प्रकार जक्कई को फरीसियों और सदूकियों के पास खड़े होने की अनुमति नहीं थी। लेकिन, हमारे प्रभु यीशु उससे प्यार करते थे, वह न केवल जक्कई उसके परिवार को भी आशीर्वाद दिया और उसे और उसके परिवार के लिए किसी भी असमानता नहीं दिखाई और उन्हें उद्धार और अनन्त जीवन के साथ आशीर्वाद दिया।हमारे प्रभु परमेश्वर का क्या नाम है? मत्ती 1 : 21 ''वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा।''हाँ, प्रभु यीशु इस दुनिया में भेजा गया था की वह हमारे पापों से हमें छुटकारा देने और उनके लोग को बचाने के लिए जो उस पर विश्वास करते है। यशायाह 59 : 1 ''सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहिरा हो गया है कि सुन न सके।''हाँ, हमारे प्रभु के हाथ न ही छोटे है और न ही उसके कान बहरे है। वह सब कुछ कर सकता है, हजारों गुना अधिक की तुलना में हम इस दुनिया में पूरा कर सकते हैं। लेकिन यह हमारी मूर्खता है की हमें लगता है कि वह हमें देख या सुन नहीं सकता हैं। हमें लगता है कि अगर हम गलत भी करते हैं तो वह हमें कुछ भी नहीं करेगा। क्यों प्रभु हमारी प्रार्थना नहीं सुनता है? जब हम उसके खिलाफ पाप करते है, हम में वह सभी गुण है जो कि प्रभु को नापसंद है, हमारे भीतर है, उस समय प्रभु हमारी नहीं सुनता है और न ही हमारी प्रार्थना का जवाब देता है।

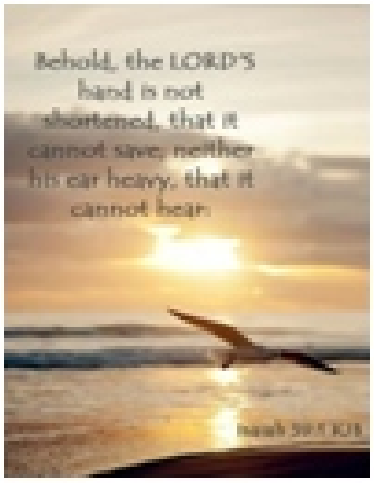

प्रभु ने शुरुआत में बड़ी खूबसूरती से इस दुनिया

को बनाया। उत्पत्ति 1 : 1 ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।''कल्पना कीजिए, हमारा परमेश्वर शक्तिशाली है, उसने स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण किया है। लेकिन जब पाप इस दुनिया में आया, मौत ने भी पीछा किया। रोमियो 5 : 12''इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया।''हमारे प्रभु ने इस दुनिया को खूबसूरत बनाया और आदमी और औरत को इस दुनिया का आनंद लेने के लिए भी बनाया है। जब पाप इस दुनिया में प्रवेश किया और पाप इस दुनिया में बहुत हुआ, तब मौत का आगमन हुआ। क्योंकि अंधेरे से हमारे जीवन में पापों के कारण, प्रभु परमेश्वर न ही हमें सुनता है और न ही हमारे प्रार्थनाओं का जवाब देता है।बल्कि जब हम उसके सामने एक धर्मी जीवन जीते हैं, हम साहस और विश्वास के साथ उनका वादा दावा कर सकते हैं, वह निश्चित रूप से सुनेगा और हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देगा। हमेशा हमें आत्मविश्वास होना चाहिए, जब हम प्रभु से कुछ मांगते हैं। कब हमें अपने भीतर आत्मविश्वास मिलता है? जब हम भीतर से धर्मी हो और प्रभु की इच्छा करते हो, हम अपने जीवन में आस्था और विश्वास हासिल करेंगे।याद रखें, नबी एलिय्याह के पर्वत कार्मेल की जीत, कैसे वह परमेश्वर की उपस्थिति को बाल के नबियों के बीच में जो जीवित परमेश्वर की शक्तियों पर ठट्ठा कर रहे थे उसका आह्वान किया। वे एलिय्याह को छेड़ रहे थे और उसका मजाक बनाया और उसे चुनौती देकर जीवित परमेश्वर को उनके बीच में उतर आने के लिए कहते हैं। हम जानते है की प्रभु परमेश्वर ने स्वर्ग से आग भेजा और पानी को बुझा दिया और एलिय्याह द्वारा बलिदान की पेशकश को आग लगा दी।क्यों प्रभु ने नबी एलिय्याह के प्रार्थना का जवाब दिया था, क्योंकि वह प्रभु से आज्ञाकारी था, वह सब कुछ जो प्रभु की दृष्टि में भाता वह करता था। प्रभु ने उनके परिवार को छोड़ देने को कहा, और छुपकर नदी चेरीत से दूर जाने के लिए कहा, वह बात मानी।

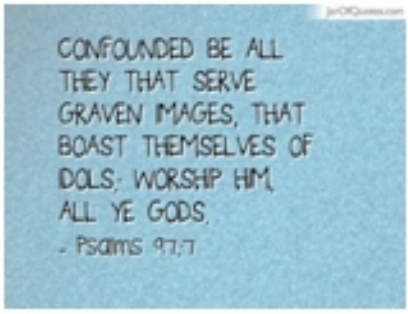

बाद में प्रभु ने एलिय्याह को आदेश दिया की वह जारिफत को जाएं और विधवा के घर जो उसे खाने के लिए भोजन देगी जाएं। एलिय्याह ने प्रभु के हर आदेश का पालन किया, इस प्रकार प्रभु ने उसे बहुतायत से आशीर्वाद दिया और उसे बाल के नबियों के बीच जीत दिलाई। वचन कहता हैं भजन संहिता 97 : 7 ''जितने खुदी हुई मूर्तियों की उपासना करते और मूरतों पर फूलते हैं, वे लज्जित हों; हे सब देवताओं तुम उसी को दण्डवत करो।''कौन लज्जित किया जाएगा? उन सभी को जो मूर्ति और मूर्ति पूजक की सेवा करते है शर्मनाक होंगे। यह बात ने नबी एलिय्याह को आत्मविश्वास दिलाई और इस तरह वह प्रभु परमेश्वर का आह्वान किया और प्रभु ने स्वर्ग से आग नीचे भेजा और एलिजा को जीत दिलाई। बाल के हर मूर्ति की पूजा करनेवालों को शर्मनाक कर दिया। याद रखें, हर घुटने हमारे जीवित परमेश्वर के सामने झुकना चाहिए। यहां तक कि जब हम प्रभु की इच्छा के अनुसार हमारे जीवन को जीते हैं, प्रभु हमारे सभी प्राथनाओं का जवाब देगा। प्रभु के बिना कोई दूसरा रास्ता नहीं है, इस प्रकार हम हमेशा अकेले प्रभु की इच्छा करने की चाह होनी चाहिए। हालांकि कितना ही ज्यादा हम अपने प्रभु को खुश रखेंगे, वह हमें उतना ही ऊपर ऊंचा और ऊंचा उठाएगा। हमें इस पर भरोसा करना चाहिए और उस में विश्वास होना चाहिए।

1 यूहन्ना 5 : 14–16 ''14 और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है, कि यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो हमारी सुनता है। 15 और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने उस से मांगा, वह पाया है। 16 यदि कोई अपने भाई को ऐसा पाप करते देखे, जिस का फल मृत्यु न हो, तो बिनती करे, और परमेश्वर, उसे, उन के लिए, जिन्हों ने ऐसा पाप किया है जिस का फल मृत्यु न हो, जीवन देगा। पाप ऐसा भी होता है जिसका फल मृत्यु है: इस के विषय में मैं बिनती करने के लिए नहीं कहता।''हम जानते हैं कि जो कुछ भी हम

'यीशु के नाम' में मांगते हैं, हमें उनकी इच्छा के अनुसार प्राप्त होगा। यह विश्वास है कि हमें परमेश्वर की ओर से प्राप्त हुआ है। जब हम उसकी इच्छा करते हैं और जब हम सब उत्तम धार्मिकता करते हैं, प्रभु हमारे सभी प्राथनाओं को सुनेगा और उसका जवाब देगा। याद रखें कि हम सभी के भीतर एक आवाज लगातार हमारे लिए बोल रहा है, एक हमारे भीतर 'अंतरात्मा की आवाज', जो हमें बताता है कि क्या सही है और क्या गलत है।अगर हम में 'अंतरात्मा की आवाज' नहीं है, तो हम मरे हुए जीवित हैं। हमारा जीवन बेकार और व्यर्थ हो जाता है। हमारी अंतरात्मा की आवाज हमेशा हम से कहती है कि ''क्या मूर्खता का काम मैंने किया'', ''मुझे किसी से इस तरह की बात नहीं करनी चाहिए'', ''मुझे उनके संगत में नहीं जाना चाहिए था।'

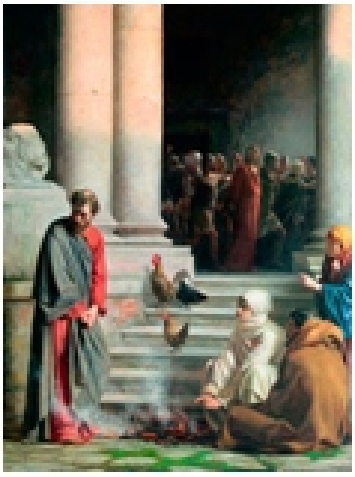

हाँ, हमारी अंतरात्मा की आवाज हमेशा सही रास्ते में हमें मार्ग दर्शित करती है। वह हमसे लगातार बात करती है। लेकिन अगर हम अपने अंतरात्मा की आवाज को खारिज कर देते है, अगर हम अपने अंतरात्मा की आवाज को पहले से ही इनकार करते है, यह हमें छोड़ देगा और इस तरह हम एक मृत रहने वाले हो जाते हैं। हम हमेशा ध्यान से हमारी अंतरात्मा को सुनना चाहिए और हमारे भीतर की आवाज को आज्ञाकारी होना चाहिए।हाँ याद रखना! पतरस भी यीशु से आगाह किया गया था, वह और भी अधिक सावधान होना चाहिए था और ध्यान से क्या यीशु ने पतरस से कहा जानना चाहिए था। लेकिन पतरस ने यीशु से दुरी बना ली थी, लूका 22 : 54 ''फिर वे उसे पकड़कर ले चले, और महायाजक के घर में लाए और पतरस दूर ही दूर उसके पीछे पीछे चलता था।''जब हमें कुछ बताया जाता है, हम हमेशा सतर्क और इसके बारे में सचेत होना चाहिए। हमें कभी प्रभु से दूर बहाव नहीं करना चाहिए। पतरस को तभी याद आया जब मुर्गा के तीसरी बार बाँग देने के बाद हीयीशु ने क्या कहा थायाद आया। पतरस को तब एहसास हुआ कि उसने क्या किया वह गलत था और इस तरह उसे पछतावा हुआ। हमें पतरस की तरह नहीं होना चाहिए, हमें जीवन की चेतावनी को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए जो कि प्रभु हमें देता है। याद रखें, प्रभु सब जानता है, उसके पास से कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। लेकिन अधिकतर समय में, हमें यह पता है फिर भी हम प्रभु की इच्छा के खिलाफ बहुत सी बातें करते हैं।2 थिस्सलुनीकियों 2 : 10 ''और नाश होने वालों के लिए अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिस से उन का उद्धार होता।''अंत समय के दौरान, अगर हम केवल सच सुनेगे, लेकिन सच्चाई को जियेंगे नहीं या सच्चाई का पालन नहीं करेंगे ,तो उस समय हमारा हर क्रोध, अभिमान, कड़वाहट, अलग अलग तरीकों से अवज्ञा हमें नरक की आग के लिए ले जाएगा और हम उसके साथ नष्ट हो जाएंगे हमारे अधर्म के साथ। हम ने पवित्र ग्रंथ में देखा है, कि जो कोई भी प्रभु की खोज में गया वह उसे मिल गया, और वे उद्धार और अनन्त जीवन के साथ आशीषित हुए। यह हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है, परमेश्वर से प्रेम करना और क्रूस के कष्टों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हम जानते हैं कि कैसे शत्रु यीशु मसीह के पीछे था, लेकिन अंत तक यीशु शत्रु से लड़ा और जीत हासिल की।यूहन्ना 17 : 3 ''और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझेअद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।''बिना सच्चेपरमेश्वर को जाने और यीशु मसीह को, जिसे प्रभु परमेश्वर ने हमारे लिए इस दुनिया में भेजा, जब तक कि यह सच जाने, हमारे लिए कोई अनन्त जीवननहीं है।

इस प्रकार, अनन्त जीवन हासिल करने के लिए, हमें आत्मविश्वास और निष्ठा प्रभु पर होना चाहिए, हमारे प्रभु यीशु मसीह जो इस दुनिया में हमारे लिए भेजा गया था, ताकि हमें पापों से छुटकारा मिले और हमें अनन्त जीवन के साथ हमें आशीर्वाद दे।

प्रभु इस वचन को आशीष दे!

पास्टर सरोज म.